# पौलुस के धर्मविज्ञान का केन्द्र

अध्याय 3

## पौलुस और थिस्सलुनिकियों

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

## थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

**संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।**

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

# विषय-वस्तु

परिचय ........................................ 1
पृष्ठभूमि ........................................ 1
पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा ........................................ 1
थिस्सलुनिके में समस्याएं ........................................ 3
सताव ........................................ 3
झूठे भविष्यवक्ता ........................................ 4
मसीही जीवन ........................................ 5
संरचना और विषय-वस्तु ........................................ 7
1थिस्सलुनिकियों ........................................ 7
अभिवादन/अंतिम टिप्पणियां ........................................ 7
आभार-प्रदर्शन ........................................ 7
पौलुस की अनुपस्थिति ........................................ 8
निर्देश ........................................ 9
2 थिस्सलुनिकियों ........................................ 10
अभिवादन/अंतिम कथन ........................................ 10
आभार-प्रदर्शन और उत्साह ........................................ 11
प्रार्थना ........................................ 11
निर्देश ........................................ 11
धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण ........................................ 12
उद्धार की धर्मशिक्षा ........................................ 13
अतीत का उद्धार ........................................ 13
भविष्य का उद्धार ........................................ 14
वर्तमान उद्धार ........................................ 15
नैतिकता ........................................ 15
उद्धार की प्रक्रिया ........................................ 16
नैतिक आशय ........................................ 16
ऐतिहासिक अवस्था ........................................ 17
उपसंहार ........................................ 19



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

# पौलुस के धर्मविज्ञान का केन्द्र

अध्याय तीन

पौलुस और थिस्सलुनिकियों

## परिचय

हाल ही में, मैंने एक पिता के विषय में सुना जिसने अपने पुत्र के दीक्षांत समारोह में हिस्सा लिया। समारोह के बाद, वह गर्व से अपने पुत्र के पास गया और पुछा, “तो पुत्र, अब तुम अपने जीवन में क्या करने वाले हो?” पुत्र ने मुस्कुराते हुए कहा, “पिताजी, मैंने अपने भविष्य के विषय में काफी सोचा है, और मैं सोचता हूँ कि अब तो बस मैं सेवानिवृत ही हो जाता हूँ।” अब हम में से अधिकांश इस युवा स्नातक से सहानुभूति प्रकट करेंगे। परन्तु लगभग हर व्यक्ति महसूस करता है कि जिम्मेदार बनने के लिए सेवानिवृत होने से पहले हमें कई वर्ष कठिन परिश्रम करना पड़ता है।

अब चाहे यह अजीब ही प्रतीत होता हो, उस युवा व्यक्ति का स्वभाव लगभग वैसा ही लग रहा है जैसा कि पहली सदी में रहने वाले कुछ लोगों का था। वे मसीह के महिमामय द्वितीय आगमन के लिए इतने जोश से भर गए थे कि उन्होने इस जीवन में मसीह के लिए जीवन बिताने की जिम्मेदारियों को त्याग दिया था।

पौलुस के धर्मविज्ञान के केन्द्र के तीसरे अध्ययन का शीर्षक है, “पौलुस और थिस्सलुनिकियों।” और इस अध्याय में, हम देखने जा रहे हैं कि थिस्सलुनिकियों की कलीसिया के कुछ मसीहियों ने किस प्रकार समस्याएं पैदा कर दी थीं, क्योंकि वे यह मानने लगे थे कि मसीह का आगमन बहुत ही शीघ्र होने वाला है। इसके अलावा हम इस बात पर भी चर्चा करने वाले हैं कि पौलुस ने किस प्रकार इस गलत धारणा का प्रत्युत्तर दिया।

पौलुस और थिस्सलुनिकियों का हमारा अध्ययन तीन भागों में विभाजित किया जाएगा। सर्वप्रथम हम पौलुस द्वारा थिस्सलुनिकियों को लिखी पत्रियों की पृष्ठभूमि का आकलन करेंगे। फिर हम 1 और 2 थिस्सलुनिकियों की संरचना और विषय-वस्तु की जांच करेंगे। और उसके बाद हम देखेंगे कि किस प्रकार पौलुस की पत्रियां उसके मुख्य धर्मविज्ञानी दृष्टिकोणों को प्रकट करती हैं, अर्थात् अंतिम दिनों या युगांतविद्या की उसकी धर्मशिक्षा को। तो आइए सबसे पहले हम थिस्सलुनिकियों को लिखी पौलुस की पत्रियों की पृष्ठभूमि की ओर देखें।

## पृष्ठभूमि

जिस प्रकार हमने इस पूरी श्रृंखला में बल दिया है, प्रेरित पौलुस ने अपनी पत्रियां किन्हीं विशेष विषयों को संबोधित करने के लिए लिखी थीं जो भिन्न-भिन्न कलीसियाओं में उत्पन्न हुए थे। अत:, अब जब हम 1 और 2 थिस्सलुनिकियों को देखते हैं, तो हमें कुछ मूलभूत प्रश्नों को पूछना आवश्यक है: थिस्सलुनिकियों की कलीसिया में क्या चल रहा था? पौलुस ने उन्हें पत्रियां क्यों लिखी?

हम इन प्रश्नों का उत्तर पहले पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा को जांचने और फिर थिस्सलुनिके की कलीसिया में विकसित कुछ खास समस्याओं को देखने के द्वारा देंगे। आइए सबसे पहले पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा पर ध्यान दें।

### पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा

पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा का वर्णन प्रेरितों के काम के अध्याय 15 के पद 36 से लेकर अध्याय 18 के पद 22 में किया गया है। वहां लूका कहता है कि पौलुस ने वर्तमान यूनान के अनेक क्षेत्रों में जाने से पूर्व प्रमुखत: एशिया माइनर के क्षेत्रों में यात्रा की थी। पौलुस की पहली मिशनरी यात्रा के समान यह यात्रा भी सीरीया के



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

अंताकिया से ही प्रारंभ हुई थी, और समय था लगभग 48 या 49 ईस्वी। पौलुस और बरनबास ने एक साथ मिलकर यह सेवा करने की योजना बनाई थी, परन्तु उनके बीच मतभेद हो गया क्योंकि बरनबास यूहन्ना मरकुस को अपने साथ लेकर जाना चाहता था। पौलुस ने इस पर एतराज किया क्योंकि मरकुस उन्हें पहली मिशनरी यात्रा में बीच में ही छोड़कर वापिस लौट आया था। फलस्वरूप, पौलुस ने सीलास को अपनी यात्रा के साथी के रूप में चुन लिया, और बरनबास एवं मरकुस साइप्रस की ओर चल पड़े।

पौलुस और सीलास पहले सीरीया और फिर किलिकिया से होकर गुजरे। यद्यपि हमें यह ज्ञात नहीं है कि वे किन नगरों में गए, परन्तु प्रेरितों के काम की पुस्तक यह जरुर बताती है कि उन्होंने इन क्षेत्रों में कई कलीसियाओं को मजबूत किया। किलिकिया से वे गलातिया को गए, वहां वे उन कलीसियाओं में भी गए जो पौलुस ने अपनी पहली मिशनरी यात्रा के दौरान स्थापित की थीं। वे पहले दिरबे में रुके और फिर लुस्त्रा में जहां से तिमुथियुस भी उनके साथ हो लिया। लुस्त्रा से वे सब लोग गलातिया और फ्रूगिया की ओर गए।

अब इस बिंदू पर पौलुस एशिया के क्षेत्र, जो एशिया माइनर का सबसे पश्चिम का भाग था, और उत्तर के बितूनिया में प्रचार करना चाहता था। परन्तु पवित्र आत्मा ने इसकी अनुमति नहीं दी। अत: वह पूरा दल फ्रूगिया से त्रोआस के समुद्री किनारे की ओर चले गए जो लगभग 300 मील दूर था जहां जल्दबाजी में उनके पश्चिम की ओर जाने का कारण स्पष्ट हो गया। स्वप्न में पौलुस ने एक व्यक्ति को देखा जिसने उससे मकिदूनिया आने का आग्रह किया, विशेषकर उन क्षेत्रों में जो अब यूनान के उत्तरी क्षेत्रों में पाए जाते हैं।

इस स्वप्न के प्रत्युत्तर में पौलुस और उसके साथी तत्काल मकिदूनिया की ओर चल पड़े। फिलिप्पी, जहां वे कुछ समय रूके और बहुत से लोगों को मसीह के पास आते हुए देखा, पहुंचने से पूर्व वे थोड़े समय के लिए नियापुलिस से होकर गए। फिर भी अंत में फिलिप्पी के लोगों ने पौलुस को एक गुलाम लड़की में से दुष्टात्मा को निकालने के कारण कैद करवा दिया। परन्तु कैद में भी सुसमाचार का प्रचार हुआ। आधी रात को एक भूकंप ने कैदियों के बंधनों को ढ़ीला कर दिया और कैदगाह के दरवाजों को खोल दिया। यद्यपि कैदी वहां से भाग सकते थे परन्तु वे अपनी कोठरियों में ही रहे ताकि दरोगा को उनके भाग जाने के कारण दंड न भुगतना पड़े। दरोगा इस भलाई के कार्य से बहुत प्रभावित हो गया और उसने एवं उसके पूरे घराने ने विश्वास किया।

फिलिप्पी से मिशनरी अम्फिपुलिस और अप्पुलोनिया से होते हुए थिस्सलुनिके पहुंचे, जहां पौलुस ने तीन सप्ताह तक आराधनालय में सुसमाचार का प्रचार किया। इस सुसमाचार के प्रचार के माध्यम से अनेक यहूदियों और बहुत से गैरयहूदियों ने सुसमाचार ग्रहण किया। अपनी आर्थिक सहायता के लिए पौलुस ने इस समय कुछ कार्य भी किया, और फिलिप्पी के मसीहियों से भेंटें भी ग्रहण की जिससे उसकी आवश्यकताएं पूरी होने में सहायता हुई। ये बातें दर्शाती हैं कि पौलुस शायद कुछ महिनों तक थिस्सलुनिके में रहा। फिर अंत में कुछ गैरविश्वासी यहूदी सुसमाचार की सफलता से जलने लगे और उन्होंने पौलुस और सीलास के खिलाफ भीड़ एकत्रित कर ली और उन्हें बिरीया की ओर चले जाने को मजबूर किया।

पहले तो बिरीयावासियों ने पौलुस के सुसमाचार को उत्सुकतापूर्वक ग्रहण किया। परन्तु जल्द ही थिस्सलुनिके के गैरविश्वासी यहूदियों को इस बात का पता चल गया और उन्होंने इस शहर को भी उसके विरुद्ध भड़का दिया। पौलुस को एक बार फिर भागना पड़ा, और इस बार उसने ऐथेंस की ओर रुख किया जहां उसने आराधनालय में न केवल यहूदियों के समक्ष प्रचार किया जैसी कि उसकी रीति थी बल्कि मार्स हिल पर इपिकुरी और स्तोईकी दार्शनिकों के समक्ष भी।

ऐथेंस से पौलुस कुरिन्थ की ओर गया जहां उसने कलीसिया को स्थापित करने और बढ़ाने में लगभग डेढ़ वर्ष, शायद इससे भी अधिक बिताया। इसके पश्चात् वह पूर्व की ओर बढ़ा, कुछ देर किंख्रिया में ठहरा और फिर एशिया माइनर के इफिसुस की ओर बढ़ गया। यहां से वह कैसरिया की ओर फिर कुछ समय शायद यरुशलेम में रुकता हुआ सीरीया के अंताकिया में अपने घर की ओर चला गया। उसकी यात्रा लगभग 51 या 52 ईस्वी में समाप्त हुई।

इस दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान पौलुस ने थिस्सलुनिकियों को ये दोनों पत्रियां लिखीं। 1थिस्सलुनिकियों 3:1-2 के अनुसार जब पौलुस ऐथेंस में था तो पौलुस ने तिमुथियुस को थिस्सलुनिके वापिस भेजा कि वह वहां के

विश्वासियों को उत्साहित करे। यह लगभग 49 या 50 ईस्वी के दौरान हुआ होगा, पौलुस और उसके दल के द्वारा थिस्सलुनिके छोड़ने के कुछ ही समय बाद। जब तिमुथियुस लौटा, शायद 50 या 51 ईस्वी में, पौलुस संभवत: कुरिन्थ में था। स्पष्टत:, तिमुथियुस ने पौलुस को उन अनेक झूठी धारणाओं और व्यावहारिक समस्याओं के विषय में बताया होगा जो थिस्सलुनिकियों की कलीसिया में उठ खड़ी हुई थीं। पौलुस ने संभवत: पौलुस के आगमन के ठीक बाद ही इन विषयों को संबोधित करने के लिए 1थिस्सलुनिकियों की पत्री लिखी होगी। 2थिस्सलुनिकियों की पत्री भी कुरिन्थ से ही शायद कुछ महिनों के बाद लिखी गई होगी।

अब जब हमने देख लिया है कि किस प्रकार पौलुस द्वारा थिस्सलुनिकियों को लिखी गई पौलुस की पत्रियां उसकी दूसरी मिशनरी यात्रा के विशाल संदर्भ में उपयुक्त बैठती है, तो हमें उन समस्याओं पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए जो थिस्सलुनिके की कलीसिया में उत्पन्न हो गईं थीं।

## थिस्सलुनिके में समस्याएं

पौलुस किन विषयों से चिंतित था? इतना वह क्या गंभीर विषय था कि उसने थिस्सलुनिकियों को एक नहीं बल्कि दो पत्रियां लिखीं? जैसा हर परिस्थिति में होता है, थिस्सलुनिके में और भी काफी मिली-जुली समस्याएं थीं। परन्तु जब हम पौलुस द्वारा इस कलीसिया को लिखी पत्रियां को पढ़ते हैं तो तीन समस्याएं सामने आती हैं: पहली, सताव का संघर्ष; दूसरी, कलीसिया में झूठे भविष्यवक्ताओं का उत्थान; और तीसरी, मसीही जीवन के कुछ व्यावहारिक विषय जो झूठे भविष्यवक्ता कलीसिया में लेकर आए थे। सबसे पहले आइए हम सताव की समस्या पर ध्यान केन्द्रित करें।

### सताव

जब पौलुस सर्वप्रथम थिस्सलुनिके में सुसमाचार लेकर आया था तो वहां के विश्वासी हिंसा और जीवन-घातक सताव को सहने के पात्र बन गए थे। प्रेरितों के काम 17:5 में लिखित थिस्सलुनिके में घटी घटनाओं का लूका द्वारा वर्णन सुनें:

> परन्तु यहूदियों ने डाह से भरकर बाजारु लोगों में से कुछ दुष्ट मनुष्यों को अपने साथ में लिया और भीड़ इकट्ठी करके नगर में हुल्लड़ मचाने लगे। और यासोन के घर पर चढ़ाई करके उन्हें लोगों के सामने लाना चाहा। (प्रेरितों के काम 17:5)

वास्तव में, थिस्सलुनिके के गैरविश्वासी इतने उग्र थे कि वे पौलुस और सीलास को अपने नगर से केवल बाहर खदेड़ने में ही संतुष्ट नहीं थे। इसकी अपेक्षा उन्होंने बिरीया और उससे आगे तक मिशनरियों को सताने के लिए उनका पीछा किया। लूका ने प्रेरितों के काम 17:13 में इसका वर्णन किया है:

> किन्तु जब थिस्सलुनिके के यहूदी जान गए कि पौलुस बिरीया में भी परमेश्वर का वचन सुनाता है, तो वहां भी आकर लोगों को उकसाने और हलचल मचाने लगे। (प्रेरितों के काम 17:13)

सुसमाचार के यहूदी-विरोधी काफी हठी थे, और उन्होंने नगर-दर-नगर मसीहियों का पीछा करते हुए गैरयहूदियों को भी मसीही विश्वास का विरोध करने को प्रेरित किया।

थिस्सलुनिके को लिखी पौलुस की पत्री दर्शाती है कि यह कष्ट थिस्सलुनिके से उसके चले जाने के बाद भी जारी रहीं। 1थिस्सलुनिकियों 2:14-16 में पौलुस ने उनके द्वारा सहे गए कष्टों का वर्णन इस प्रकार किया:

> इसलिए तुम परमेश्वर की उन कलीसियाओं की सी चाल चलने लगे जो यहूदिया में मसीह यीशु में है क्योंकि तुमने भी अपने लोगों से वैसा ही दुःख पाया जैसा उन्होंने यहूदियों से पाया था जिन्होंने प्रभु यीशु को और भविष्यवक्ताओं को भी मार डाला और हमको सताया और



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> परमेश्वर उनसे प्रसन्न नहीं, और वे सब मनुष्यों का विरोध करते हैं और वे अन्यजातियों से उनके उद्धार के लिए बातें करने से हमें रोकते हैं। (1थिस्सलुनिकियों 2:14-16)

थिस्सलुनिके में पौलुस द्वारा सबसे पहले प्रचार करने से लेकर उनको पत्रियां लिखने तक, मसीह के लिए जीने के लिए सताव एक महत्वपूर्ण विशेषता रही थी। और जब पौलुस ने इस नगर के विश्वासियों को पत्री लिखी, तो वह इस सताव और उन पर पड़ने वाले इसके प्रभाव के विषय में काफी चिंतित था।

## झूठे भविष्यवक्ता

सताव सहने के अतिरिक्त, थिस्सलुनिके की कलीसिया झूठे भविष्यवक्ताओं के प्रभाव में भी आ गई थी। कुछ रूपों में यह कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है। पहली बात तो पूरे इतिहास में जब भी मसीहियों ने काफी लम्बे समय तक सताव सहा तो वे प्राय: यही चाहते थे कि यीशु पुन: लौटकर उन्हें उनके कष्टों से छुड़ाएं। सरल भाषा में कहें तो कष्ट सहने वाले मसीही अपना पूर्ण जीवन मसीह के द्वितीय आगमन की ओर निर्देशित कर देते हैं। जब यह जीवन हमें निराशा और कष्ट देता है तो हम हमारे ध्यान को उस दिन की ओर लगा देते हैं जब यीशु हमें बचाएगा।

दूसरी बात, जब मसीही मसीह के पुनरागमन के विषय में बहुत अधिक चिंतित होते हैं तो वे झूठे शिक्षकों और झूठे भविष्यवक्ताओं के प्रति संवेदनशील बन जाते हैं जिनके पास मसीह के द्वितीय आगमन के विषय में काफी उग्र दृष्टिकोण होते हैं। और थिस्सलुनिकियों के साथ बिल्कुल ऐसा ही हुआ था। झूठे शिक्षक मसीह के पुनरागमन की नजदीकी के विषय में कई गलत विचारों को लेकर कलीसिया में आए थे।

यह देखने के लिए कि झूठे शिक्षकों ने थिस्सलुनिके में कितनी समस्याएं पैदा कर दीं थीं, हम दो बातों पर ध्यान देंगे: झूठे भविष्यवक्ताओं और पौलुस के बीच पैदा हुआ संघर्ष, और झूठे भविष्यवक्ताओं की शिक्षा। आइए पहले हम झूठी भविष्यवाणी की चुनौती पर ध्यान दें।

1 और 2 थिस्सलुनिकियों के कई हिस्सों में यह स्पष्ट है कि झूठे शिक्षकों ने पौलुस की शिक्षा का मजबूती से विरोध किया था। उदाहरणत: जब उसने थिस्सलुनिकियों की कलीसिया की अवस्था के विषय में तिमुथियुस का विवरण सुना तो पौलुस को ज्ञात हुआ कि झूठे भविष्यवक्ता विश्वासियों की संगति में घुस आए हैं और उन्होंने उसकी कुछ शिक्षाओं के विरोध में काफी कुछ कहा है। इस समस्या के प्रति पौलुस का एक प्रत्युत्तर थिस्सलुनिकियों को यह स्मरण करवाना था कि वे जो भी भविष्यवाणी सुनें उसे परख लें। 1थिस्सलुनिकियों 5:20-21 में उसके शब्दों को सुनें:

> भविष्यवाणियों को तुच्छ न जानों। सब बातों को परखो; जो अच्छी हैं उसे पकड़े रहो *(1थिस्सलुनिकियों 5:20-21)*

पौलुस ने थिस्सलुनिकियों को कहा कि “सब बातों को परखो” और “जो अच्छी हैं उसे पकड़े रहो” क्योंकि वह चाहता था कि जो भी निर्देश उन्हें दिए जाते हैं वे उसके विषय को जांच लें। उन्हें केवल अच्छी बातें ही ग्रहण करनी थीं और उन सबकी उपेक्षा करनी थी जो पवित्र-वचन और पौलुस की शिक्षा के अनुकूल नहीं थीं।

परन्तु झूठे शिक्षकों ने जल्दी हार नहीं मानी। इसकी अपेक्षा उन्होंने झूठी धर्मशिक्षाओं को सिखाना और उसका प्रचार करना जारी रखा। वास्तव में वे इतना आगे बढ़ गए होंगे कि वे थिस्सलुनिकियों को अपने विचारों से बहकाने के प्रयास में पौलुस के नाम से झूठी पत्रियां लिखने लगे होंगे। पौलुस ने जब 2 थिस्सलुनिकियों 2:1-2 में यह लिखा तो वह इस प्रकार के कार्य से काफी चिंतित था:

> हे भाइयो, कि किसी आत्मा, या वचन, या पत्री के द्वारा, जो कि मानो हमारी ओर से हो, यह समझ कर कि प्रभु का दिन आ पहुंचा है, तुम्हारा मन अचानक अस्थिर न हो जाए और न तुम घबराओ *(2थिस्सलुनिकियों 2:1-2)*

झूठी पत्रियां लिखने की समस्या के विषय में पौलुस की चिंता 2थिस्सलुनिकियों 3:17 में भी स्पष्ट है जहां उसने यह लिखा:

> मैं, पौलुस, अपने हाथ से नमस्कार लिखता हूं। हर पत्री में मेरा यही चिन्ह है; मैं इसी प्रकार से लिखता हूँ *(2थिस्सलुनिकियों 3:17)*

पौलुस ने अपने हाथों से लिखे शब्दों को हस्ताक्षर के रूप में जोड़ा जिसने उसकी पत्रियों और झूठी पत्रियों में अंतर किया और थिस्सलुनिकियों की सहायता की कि वे उन पत्रियों को पहचान लें जो उसकी ओर से हैं और झूठी भविष्यवाणी को ठुकरा दें।

झूठे भविष्यवक्ताओं के साथ यह संघर्ष हमारे लिए अन्य विषय को उत्पन्न करता है जब हम थिस्सलुनिकियों को लिखी पत्रियां पढ़ते हैं: ये झूठे नबी क्या सिखा रहे थे? हम उन सब बातों को जान नहीं सकते कि उन्होंने क्या-क्या सिखाया, परन्तु जब थिस्सलुनिके में जारी सताव को स्मरण करते हैं और पौलुस की थिस्सलुनिकियों को लिखी पत्री के विषय का आकलन करते हैं, तो हम अनुमान लगा सकते हैं कि झूठे भविष्यवक्ताओं को मसीह के द्वितीय आगमन के विषय में अनेक गलत धारणाएं थीं। फिर भी, उनकी मुख्य समस्या उनकी यह धारणा थी कि यीशु हाल ही में लौट आएंगे। वास्तव में, शायद यह हमें अविश्वसनीय प्रतीत हो, कुछ झूठे भविष्यवक्ताओं ने यहां तक घोषित कर दिया था कि मसीह पहले ही लौट चुका है। 2थिस्सलुनिकियों 2:1-3 को सुनें:

> अब हम अपने प्रभु यीशु मसीह के आने और उसके पास अपने इकट्ठे होने के विषय में तुमसे विनती करते हैं कि किसी आत्मा या वचन या पत्री के द्वारा ... यह समझकर कि प्रभु का दिन आ पहुंचा है तुम्हारा मन अचानक अस्थिर न हो जाए और न तुम घबराओ। किसी रीति से किसी के धोखे में न आना। *(2थिस्सलुनिकियों 2:1-3)*

स्पष्टत: कम से कम कुछ झूठे भविष्यवक्ताओं ने यह सिखा दिया था कि थिस्सलुनिकियों की कलीसिया ने मसीह के पुनरागमन को पहले ही खो दिया है। संभवतः उन्होंने ये विचार थिस्सलुनिके के स्थानीय धार्मिक समूह से प्राप्त किए होंगे जो काबिरुस की आराधना करते थे, जो एक स्थानीय नायक था जिसकी हत्या कर दी गई थी और जिसके बारे में कहा जाता था कि वह समय-समय पर संसार में लौटता है; थिस्सलुनिकियों की कलीसिया को यह बताने के द्वारा कि मसीह पहले से ही लौट चुका है, झूठे शिक्षकों ने मसीही विश्वास पर शायद ऐसा परिवेश लागू किया होगा।

इन भ्रांतियों का स्रोत चाहे जो भी रहा हो, पौलुस ने इन झूठे भविष्यद्वक्ताओं की कड़ी भर्त्सना की और थिससलुनिकियों को कहा कि वे उसे पकड़े रहें जो उसने मसीह के पुनरागमन के बारे में उन्हें बताया था।

## मसीही जीवन

अब जब हमने देख लिया है कि किस प्रकार सताव और झूठी भविष्यवाणी थिस्सलुनिकियों के बीच पहुँची,तो अब हमें उन व्यावहारिक तरीकों को देखना चाहिए कि किस प्रकार इन समस्याओं ने कलीसिया को प्रभावित किया। थिस्सलुनिकियों को लिखीं पौलुस की पत्रियों में कई महत्वपूर्ण विषय प्रकट होते हैं, परन्तु हम केवल दो पर ध्यान केन्द्रित करेंगे: और वे विषय हैं निराशा और गैरजिम्मेदारी। आइए पहले हम थिस्सलुनिकियों की निराशा पर ध्यान दें।

सामान्यत: जब मसीहियों की यह धारणा होती है कि यीशु का पुनरागमन काफी करीब है, तो उनका निराश होना स्वाभाविक है क्योंकि यीशु पुन: प्रकट नहीं हुआ है। थिस्सलुनिके में अनेक विश्वासियों ने अपने जीवन को मसीह के तत्काल आगमन पर निर्भर कर दिया था। उन्होंने कष्ट सहा था और मसीह के लिए काफी कुछ त्याग दिया था। फिर भी जब महिने गुजरते गए तो वे केवल निराश ही नहीं हो गए बल्कि अनेक विश्वासी चल भी बसे जिससे समस्या और भी अधिक जटिल हो गई। जो जीवित बचे वे स्वर्गवासी विश्वासियों की अनन्त मंजिल (भाग्य)



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

के विषय में चिंतित हो गए। इस असंमजस ने संदेह पैदा कर दिया और संदेह ने निराशा। सुनें 1थिस्सलुनिकियों 4:13 और 14 में पौलुस किस प्रकार प्रेमपूर्वक उनकी धारणाओं को सुधारता है:

> हे भाइयो हम नहीं चाहते कि तुम उनके विषय में जो सोते हैं, अज्ञानी रहो; ऐसा न हो कि तुम दूसरों के समान शोक करो जिन्हें आशा नहीं। क्योंकि यदि हम विश्वास करते हैं कि यीशु मरा और जी भी उठा तो वैसे ही परमेश्वर उन्हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा। *(1थिस्सलुनिकियों 4:13-14)*

पौलुस ने थिस्सलुनिकियों को आश्वस्त किया कि यद्यपि मृत विश्वासी शारीरिक रूप से मर गए हों, वे फिर भी मसीह के साथ जीवित हैं, और जब मसीह लौटेगा तो वे उसके साथ पुन: लौटेंगे।

निराशा और असंमजस के साथ-साथ, झूठे भविष्यवक्ताओं के संदेश ने गैरजिम्मेदारीपूर्ण जीवन बिताने की ओर भी अग्रसर किया था। थिस्सलुनिके में क्या हुआ यह समझना कोई मुश्किल बात नहीं है। स्वयं को उनकी परिस्थिति में रखकर देखें। यदि आप विश्वास करते हों कि यह संसार अगले महिने समाप्त हो जाएगा, तो क्या आप फिर भी काम पर जाएंगे, या अपने घर की मरम्मत करवाएंगे, या विद्यालय बनवाएंगे? यदि आपको पूर्ण भरोसा हो कि यीशु मसीह कुछ ही दिनों में लौटने वाले हैं तो सामान्य गतिविधयां फिर महत्वपूर्ण प्रतीत नहीं होंगी।

थिस्सलुनिके में बिल्कुल ऐसा ही हुआ था। झूठे भविष्यवक्ताओं ने वहां के कुछ मसीहियों को भरोसा दिलवा दिया था कि उन्हें अब अपने लिए काम करने की आवश्यकता नहीं है। उनका रवैया अब ऐसा हो गया था, “काम करने की चिंता अब क्यों करें जब यीशु शीघ्र ही लौट रहा है?” इसी कारण 1थिस्सलुनिकियों 4:11 और 12 में पौलुस ने उन्हें लिखा कि वे पुन: अपने काम पर लौटें:

> जैसी हमने तुम्हें आज्ञा दी है वैसे ही चुपचाप रहने और अपना-अपना कामकाज करने और अपने अपने हाथों से कमाने का प्रयत्न करो; ताकि बाहर वालों से आदर प्राप्त करो, और तुम्हें किसी वस्तु की घटी न हो। *(1थिस्सलुनिकियों 4:11-12)*

दुर्भाग्यवश, पौलुस द्वारा प्रतिदिन के काम करने को उत्साहित करने के बावजूद भी थिस्सलुनिके के कुछ विश्वासी अपनी जिम्मेदारियों की ओर वापिस नहीं लौटे। अत: पौलुस ने इस विषय को 2थिस्सलुनिकियों में पुन: संबोधित किया, परन्तु इस समय और अधिक बल के साथ। 2थिस्सलुनिकियों 3:6-12 में उसने लिखा:

> हे भाइयो हम तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देते हैं कि तुम हर एक ऐसे भाई से अलग रहो जो अनुचित चाल चलता और जो शिक्षा उसने हमसे पाई उसके अनुसार नहीं करता ... क्योंकि जब हम तुम्हारे यहां थे तब भी यह आज्ञा तुम्हें देते थे कि यदि कोई काम करना न चाहे तो खाने भी न पाए। हम सुनते हैं कि कुछ लोग तुम्हारे बीच में अनुचित चाल चलते हैं और कुछ काम नहीं करते पर दूसरों के काम में हाथ डाला करते हैं। ऐसों को हम प्रभु यीशु मसीह में आज्ञा देते और समझाते हैं कि चुपचाप काम करके अपनी ही रोटी खाया करें। *(2थिस्सलुनिकियों 3:6-12)*

मसीह के पुनरागमन के विषय में झूठी भविष्यवाणियों ने थिस्सलुनिकियों को आलसी व निकम्मा बना दिया था। और इस निकम्मेपन ने दूसरी समस्याओं को प्रेरित किया था।

अत: हम देखते हैं कि थिस्सलुनिके में समस्याएं अनेक थीं परन्तु वे एक-दूसरे से जुड़ी हुईं थीं। सताव ने मसीह के तत्काल पुनरागमन के विषय में गलत धारणाओं के द्वार खोल दिए थे। और उन झूठी धारणाओं ने निराशा और गैरजिम्मेदारी जैसी समस्याओं की ओर प्रेरित किया। पौलुस ने आशा की थी कि थिस्सलुनिकियों को लिखी उसकी पत्री इन समस्याओं को सुलझाने में उनकी सहायता करेगी।

अब जब हमने उन महत्वपूर्ण विषयों को देख लिया है जो पौलुस द्वारा थिस्सलुनिकियों को लिखी पत्रियों की पृष्ठभूमि की रचना करते हैं, तो हम इन पत्रियों के विषय की ओर ध्यान केन्द्रित करने को तैयार हैं।

# संरचना और विषय-वस्तु

पौलुस ने थिस्सलुनिकियों को क्या लिखा? उसने किस प्रकार उनकी जटिल समस्याओं का प्रत्युत्तर दिया? हम थिस्सलुनिकियों को लिखी दोनों पत्रियों के मुख्य भागों की विषय-वस्तु का सार प्रस्तुत करते हुए उनकी संक्षिप्त रूप से जांच करेंगे। आइए 1थिस्सलुनिकियों से आरंभ करें।

## 1थिस्सलुनिकियों

पहले थिस्सलुनिकियों को पांच मुख्य भागों में बांटा जा सकता है: पहला, 1:1 में अभिवादन; दूसरा, 1:2-2:16 में धन्यवाद देने का ब्यौरा; तीसरा, 2:17-3:13 में पौलुस की अनुपस्थिति के विषय में चर्चा; चौथा, 4:1-5:22 में कलीसिया के लिए पौलुस के निर्देश; और पांचवां, 5:23-28 में कुछ अंतिम टिप्पणियां।

### अभिवादन/अंतिम टिप्पणियां

पौलुस की बहुत सी पत्रियों के समान 1थिस्सलुनिकियों के पहले और अंतिम भाग भी काफी संक्षिप्त और सीधे हैं। अभिवादन सरल रूप से दर्शाता है कि यह पत्री थिस्सलुनिकियों को संबोधित की गई है और यह पौलुस की ओर से है। रूचिकर रूप से यह सीलास और तिमुथियुस को सहलेखकों के रूप में संबोधित करती है। निसंदेह, सीलास और तिमुथियुस पौलुस के प्रेरितीय अधिकार के भागी नहीं थे इसलिए केवल पौलुस के अधिकार के आधार पर ही इस पत्री को बाइबल में सम्मिलित किया गया है। फिर भी, सीलास और तिमुथियुस का उल्लेख इस तथ्य की ओर इंगित करता है कि पौलुस ने इस त्रुटिरहित पत्री को संपूर्ण मानवीय दृष्टिकोण से लिखा था। अंतिम भाग भी काफी सरल है जिसमें आशीष वचन, प्रार्थना के लिए विनती और अंतिम अभिवादन सम्मिलित हैं। परन्तु जब हम 1थिस्सलुनिकियों के दूसरे भाग की ओर बढ़ते हैं तो हम इस पुस्तक के अधिक जटिल भाग की ओर पहुंचते हैं। यह संपूर्ण भाग परमेश्वर के प्रति पौलुस के आभार को दर्शाता है और इसे तीन मुख्य भागों में विभाजित करता है।

### आभार-प्रदर्शन

पहले अध्याय 1:2-10 में पौलुस ने स्पष्ट किया कि उसने कष्टों के बीच थिस्सलुनिकियों की सहनशक्ति के लिए परमेश्वर के प्रति आभार व्यक्त किया। जैसे कि हम देख चुके हैं गैरविश्वासी यहूदियों और गैरयहूदियों ने थिस्सलुनिके में विश्वासियों पर अत्याचार किए थे। परन्तु विश्वासी मसीह के प्रति अपने समर्पण से पीछे नहीं हटे। इसकी अपेक्षा उनकी आशा उसमें और भी अधिक मजबूत हुई। 1थिस्सलुनिकियों 1:6-7 में उनके लिए पौलुस की प्रशंसा को सुनें:

> तुम ... पवित्र आत्मा के आनन्द के साथ वचन को मानकर हमारी और प्रभु की सी चाल चलने लगे, यहां तक कि मकिदुनिया और अखया के सब विश्वासियों के लिए तुम आदर्श बन गए। *(1थिस्सलुनिकियों 1:6-7)*

थिस्सलुनिकियों ने सताव और अत्याचार का प्रत्युत्तर आनन्द के साथ दिया और उनकी विश्वासयोग्यता उदाहरणीय थी।

अध्याय 2:1-12 में पौलुस ने थिस्सलुनिकियों के विषय में अपनी सीधी जानकारी होने के लिए आभार प्रकट करना जारी रखा। यह महत्वपूर्ण था क्योंकि झूठे भविष्यवक्ताओं ने निरन्तर पौलुस के उद्देश्यों को चुनौती दी थी। 1थिस्सलुनिकियों 2:9-10 में उसने ये शब्द लिखे:

> क्योंकि हे भाइयो तुम हमारे परिश्रम और कष्ट को स्मरण रखते हो; हमने इसलिए रात-दिन काम धंधा करते हुए तुम्हें परमेश्वर का सुसमाचार प्रचार किया कि तुम में से किसी पर भार

> न हो। तुम आप ही गवाह हो और परमेश्वर भी गवाह है कि तुम विश्वासियों के बीच में हमारा व्यवहार कैसा पवित्र और धार्मिक और निर्दोष रहा। *(1थिस्सलुनिकियों 2:9-10)*

झूठे भविष्यवक्ताओं ने यह कहते हुए पौलुस को नीचा दिखाना चाहा कि उसने थिस्सलुनिकियों का फायदा उठाया और कि उसने उन्हें बहका दिया है और उन पर अपने अधिकार का गलत फायदा उठाया है। स्पष्टत: कम से कम कुछ विश्वासियों ने इन झूठी अफवाहों पर विश्वास करना आरंभ कर दिया था। इसी कारणवश, पौलुस ने उन्हें बताया कि वह कितना प्रसन्न है कि उन्होंने उसे अपनी आंखों से देखा है। और निसंदेह, उसने ऐसा थिस्सलुनिकियों को यह स्मरण दिलवाने के लिए किया था कि उन्होंने उसे इतनी अच्छी तरह से जान लिया है कि वे उन झूठे आरोपों को ठुकरा दें।

लगभग इसी प्रकार आभार-प्रदर्शन के तीसरे भाग में, जो अध्याय 2:13-16 में पाया जाता है, पौलुस ने धन्यवाद दिया कि थिस्सलुनिकियों ने उसके अधिकार को पहचान लिया है। सुनें उसने किस प्रकार यह बात 1थिस्सलुनिकियों 2:13 में कही है:

> इसलिए हम भी परमेश्वर का धन्यवाद निरन्तर करते हैं जब हमारे द्वारा परमेश्वर के सुसमाचार का वचन तुम्हारे पास पहुंचा तो तुमने उसे मनुष्यों का नहीं परन्तु परमेश्वर का वचन समझकर (और सचमुच यह ऐसा ही है) ग्रहण किया, और वह तुम विश्वासियों में जो विश्वास रखते हो, प्रभावशील है। *(1थिस्सलुनिकियों 2:13)*

थिस्सलुनिकियों ने पौलुस की शिक्षाओं को परमेश्वर के वचन के रूप में स्वीकार किया था जिसने उन्हें इतना भरोसा दिलाया कि वे उसकी शिक्षा के प्रति विश्वासयोग्य रहेंगे और झूठे भविष्यवक्ताओं को ठुकरा देंगे।

थिस्सलुनिकियों को और भी अधिक विश्वासयोग्य रहने के लिए यह बताने के द्वारा उत्साहित करने के पश्चात् कि वह उनके लिए कितना कृतज्ञ था, पौलुस अपनी पत्री के तीसरे मुख्य भाग, अर्थात् अध्याय 2:17-3:13 की ओर बढ़ता है। इस भाग में उसने अपनी यात्राओं के कारण उत्पन्न हुए वियोजन को संबोधित किया। यह भाग भी तीन हिस्सों में बांटा गया है।

## पौलुस की अनुपस्थिति

अध्याय 2:17-3:5 में पौलुस ने थिस्सलुनिकियों को अपनी निरन्तर देखभाल का आश्वासन दिया। और उसने तिमुथियुस को उनके पास भेजकर अपनी इस देखभाल को प्रदर्शित किया। 1थिस्सलुनिकियों 3:1-2 में लिखे पौलुस के शब्दों को सुनें:

> जब हमसे और न रहा गया, तो हमने यह ठहराया कि एथेन्स में अकेले रह जाएं; और हमने तिमुथियुस को जो मसीह के सुसमाचार में हमारा भाई और परमेश्वर का सेवक है, इसलिए भेजा कि वह तुम्हें स्थिर करे और तुम्हारे विश्वास के विषय में तुम्हें समझाए। *(1थिस्सलुनिकियों 3:1-2)*

प्रेमपूर्ण देखभाल के अतिरिक्त अध्याय 3:6-10 में पौलुस ने तिमुथियुस द्वारा थिस्सलुनिके से लाए गए समाचार पर अपने कृतज्ञता से परिपूर्ण आनन्द को व्यक्त किया: समाचार यह था कि विश्वासी अपने विश्वास में दृढ़ खड़े थे और वे पौलुस को उतना ही याद कर रहे थे जितना प्रेरित स्वयं उन्हें कर रहा था। इस समाचार से पौलुस इतना रोमांचित हो गया कि उसने 1थिस्सलुनिकियों 3:8 और 9 में यह लिखा:

> क्योंकि अब यदि तुम प्रभु में स्थिर रहो तो हम जीवित हैं। और जैसा आनन्द हमें तुम्हारे कारण अपने परमेश्वर के सामने है उसके बदले तुम्हारे विषय में हम किस रीति से परमेश्वर का धन्यवाद करें? *(1थिस्सलुनिकियों 3:8-9)*

अच्छी बातों से भरे तिमुथियुस का विवरण सुनकर पौलुस की चिन्ता आनन्द और विश्वास में बदल गई।



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

तीसरा, अध्याय 3:11-13 में पौलुस ने प्रार्थना करते हुए पिता से मांगा कि वह उसकी अगुवाई करे ताकि वह उनसे पुन: भेंट कर सके।

## निर्देश

इस अध्याय का चौथा मुख्य भाग अध्याय 4:1-5:22 में पाया जाता है। जिस प्रकार हम पहले ही देख चुके हैं, थिस्सलुनिके के कई विश्वासी मसीह के तत्काल पुनरागमन के विचार के कारण इतना भटक गए थे कि उन्होंने वर्तमान संसार में जीवन जीने की रूचि खो दी थी। अत: पौलुस ने उन्हें अनेक निर्देश दिए थे जिनका उद्देश्य वर्तमान की समस्याओं को सुलझाना और भविष्य की समस्याओं को रोकना था। वह यह नहीं चाहता था कि थिस्सलुनिके के विश्वासी मसीह के पुनरागमन की आशा को त्याग दें, परन्तु वह चाहता था कि वे पहचान लें कि मसीह तत्काल नहीं लौटेगा। इसी बीच वह चाहता था कि वे मसीह की आज्ञानुसार जीवन व्यतीत करें। यह भाग तुलनात्मक रूप से लम्बा है और इसमें पहले संक्षिप्त परिचय है और उसके बाद पौलुस के निर्देश का मुख्य भाग है:

सर्वप्रथम, अध्याय 4:1 और 2 इस भाग का परिचय देते हैं। यहां, पौलुस ने उसकी पहले की आज्ञाएं मानने के लिए थिस्सलुनिकियों की सराहना की। निसंदेह, वह जानता था कि उसके निर्देशों को न मानने की परीक्षा बहुत मजबूत थी क्योंकि उसके विरोधियों ने अप्रत्यक्ष, शायद स्पष्ट शब्दों में भी, सांसारिक जिम्मेदारियों से आजादी का वादा किया था। अत: पौलुस थिस्सलुनिकियों को स्मरण दिलाया कि उसकी शिक्षा में प्रभु यीशु मसीह का अधिकार पाया जाता है; परमेश्वर स्वयं उनसे व्यवहार करेगा यदि वे उसके शब्दों को नजरअंदाज कर देंगे।

दूसरा, अध्याय 4:3-5:22 में पौलुस ने बहुत से विशेष विषयों का उल्लेख किया जिनमें उसे आशा थी कि थिस्सलुनिके के मसीही पाप के विरुद्ध अपनी सुरक्षा करें और मसीह में आज्ञाकारिता को बढ़ाएं। जैसा हमने उल्लेख किया है, उसने ऐसे पापों की ओर विशेष ध्यान दिया जो थिस्सलुनिकियों की कलीसिया में झूठी शिक्षाओं के माध्यम से फैल सकते थे।

पौलुस ने अध्याय 4:3-8 में लैंगिक रूप से शुद्ध रहने की आज्ञा दी। ऐतिहासिक रूप से, लैंगिक अनैतिकता उन अनेक समुहों में पाई जाती रही है जिन्होंने सोचा है कि संसार का अंत करीब है। शायद सबसे प्रासंगिक उदाहरण थिस्सलुनिके का स्थानीय धार्मिक समूह था, जो आराधना में देवता काबारुस के आगमन को मनाते थे जिसमें लैंगिक रूप से अनैतिक व्यवहार पाया जाता था। पौलुस ने इस भाग का समापन अपने शब्दों के पीछे दैव्य अधिकार के अन्य दावे को शामिल करने के द्वारा काफी बल के साथ किया।

अध्याय 4:9 और 10 में पौलुस ने भाइचारे के प्रेम के लिए थिस्सलुनिकियों की प्रशंसा की और उन्हें और भी अधिक प्रेम करने को उत्साहित किया। इस अध्याय का संदर्भ दर्शाता है कि प्रेम को दर्शाने का एक ठोस तरीका दूसरों पर बोझ बनने की अपेक्षा अपनी सहायता स्वयं ही करना है।

अध्याय 4:11 और 12 में पौलुस ने थिस्सलुनिकियों को अर्थपूर्ण परिश्रम और प्रतिदिन के कार्य में लगे रहने की आज्ञा दी। थिस्सलुनिके के कुछ विश्वासी इस विचार से इतने मोहित हो गए थे कि यीशु तत्काल ही वापिस लौट आएंगे जिससे उन्होंने अपने प्रतिदिन के कार्य करना बंद कर दिया था। क्योंकि ये लोग धनी लोग नहीं थे, इसलिए वे शीघ्र ही दानी थिस्सलुनिके की कलीसिया के लिए आर्थिक बोझ बन गए। इससे बढ़कर जो आलस्य उन्होंने दर्शाया था उसने गैरविश्वासियों की दृष्टि में कलीसिया की विश्वसनीयता को हानि पहुंचाई।

अध्याय 4:13-18 में प्रेरित ने थिस्सलुनिकियों को सिखाया कि वे अपने उन प्रिय जनों के साथ जो मसीह में सो चुके थे, भविष्य में पुन: मिलने की आशा के साथ उत्साहित करें। दुर्भाग्यवश, थिस्सलुनिके में झूठी शिक्षा ने कुछ को भय में डाल दिया कि यीशु के पुनरागमन से पूर्व जो लोग मर चुके थे उनमें से किसी का भी उद्धार नहीं होगा।

अध्याय 5:1-11 में पौलुस ने कलीसिया को स्मरण दिलाया कि जब प्रभु लौटेगा तो अवज्ञाकारियों को दण्ड और विश्वासयोग्य को प्रतिफल देगा। लापरवाही और अनैतिकता के लिए एक कारण बनने से कहीं दूर, पौलुस यह स्पष्ट करना चाहता था कि मसीह का पुनरागमन सभी विश्वासियों को पवित्र जीवन जीने के लिए उत्साहित करना चाहिए।

अध्याय 5:12 और 13 में पौलुस ने थिस्सलुनिके में कलीसिया के उचित अगुवों के अधिकार पर पुन: बल दिया। उसने कुछ ऐसे लोगों को प्रभार सौंपा था जो सही शिक्षा का पालन करते थे, और ये लोग संभवतया झूठे शिक्षकों का विरोध कर रहे थे। फलस्वरूप, थिस्सलुनिकियों की कलीसिया को एक ओर तो सच्चे अगुवों से दूसरी ओर उनके विरोधियों से मिलेजुले संदेश मिल रहे थे। पौलुस ने यह स्पष्ट कर दिया था कि स्थापित अगुवों की शिक्षा का अनुसरण करना और झूठे भविष्यवक्ताओं की शिक्षाओं को ठुकराना आवश्यक है।

शेष पदों में पौलुस ने कई विषयों को संबोधित किया जिनकी रचना उसने अपनी पूर्व की शिक्षाओं को पुन: कायम करने और झूठे शिक्षकों द्वारा उत्पन्न की गईं समस्याओं के प्रति जरुरत से अधिक प्रतिक्रिया करने से लोगों को रोकने के लिए की थी। अध्याय 5:14 में उसने दर्शाया कि कलीसिया को जो आलसी थे उन्हें प्यार से पालने की अपेक्षा उन्हें चिताना चाहिए। परन्तु वह नहीं चाहता था कि वे सबको बाहर खदेड़ दें जो अपनी आर्थिक सहायता स्वयं नहीं कर सकते, इसलिए उसने उन्हें यह भी स्मरण दिलाया कि वे उनकी सेवा करें जो वास्तव में जरुरतमंद हैं।

अध्याय 5:15 में वह सबको हानि के बदले भलाई करने का निर्देश देने के द्वारा उन विश्वासियों के प्रति दुर्व्यवहार का खण्डन करता है जो झूठे शिक्षकों के प्रभाव तले आ गए थे।

अध्याय 5:16-18 में पौलुस ने उन मुश्किलों के बीच जिनका सामना कलीसिया कर रही थी, आनंदित रहने को प्रोत्साहित किया, और एक बार फिर उसने अपनी शिक्षाओं के पीछे ईश्वरीय अधिकार को स्थापित किया।

अध्याय 5:19-22 में उसने स्पष्ट किया कि उसके द्वारा झूठे भविष्यवक्ताओं का विरोध का अर्थ सभी नई भविष्यवाणियों और शिक्षाओं को अस्वीकार करना नहीं था। इसकी अपेक्षा, उन सब कथनों को परखा जाना आवश्यक था, और जो झूठी शिक्षाएं हैं उनको ठुकराया जाना।

इन व्यापक निर्देशों ने अनेक व्यावहारिक विषयों को संबोधित किया। हर विषय में पौलुस का व्यवहार बहुत सकारात्मक था। थिस्सलुनिकियों के लोगों ने बहुत अच्छा कार्य किया था, और पौलुस ने इस बात के लिए उनकी प्रशंसा की। परन्तु उसने उनसे यह भी याचना की थी कि वे अपने विश्वास और मसीह की सेवा में निरन्तर बढ़ते रहें।

अब जब हमने 1थिस्सलुनिकियों के विवरण को देख लिया है, तो अब हमें 2थिस्सलुनिकियों की विषय-वस्तु और संरचना की ओर बढ़ना चाहिए।

## 2 थिस्सलुनिकियों

दूसरा थिस्सलुनिकियों को भी पांच भागों में बांटा गया है: अध्याय 1:1 और 2 में अभिवादन; अध्याय 1:3-10 में आभार-प्रदर्शन और उत्साह का अन्य विवरण; अध्याय 1:11 और 12 में थिस्सलुनिकियों के लिए पौलुस की प्रार्थना; अध्याय 2:1-3:15 में पौलुस के निर्देश; और अध्याय 3:16-18 में अंतिम कथन।

### अभिवादन/अंतिम कथन

थिस्सलुनिकियों को लिखी पौलुस की दूसरी पत्री उसकी पहली पत्री के समान ही आरंभ होती है। अभिवादन संक्षिप्त और सीधा है और यह दर्शाता है कि पत्री थिस्सलुनिके की कलीसिया को लिखी गई थी। 1थिस्सलुनिकियों के समान अभिवादन स्पष्ट करता है कि पत्री केवल पौलुस की ओर से ही नहीं बल्कि सीलास और तिमुथियुस की ओर से भी है। अब पुन:, सीलास और तिमुथियुस त्रुटिरहित नहीं थे और उन्होंने प्रेरितीय अधिकार के साथ नहीं लिखा था। फिर भी, पौलुस का लेखक होना निश्चित करता है कि पूरी पत्री सच्ची है और उसका अधिकार, जो यह पत्री सिखाती है उसे मानने और उस पर विश्वास करने की, मांग करता है। वास्तव में जब हम इस पत्री के अंतिम कथनों की संक्षिप्तता को देखते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि पौलुस ही मुख्य लेखक है। हम यह पहचान सकते हैं क्योंकि पौलुस और केवल पौलुस ने इसे जालसाजी के विरुद्ध अधिकारिक बनाने के लिए इस पत्री पर हस्ताक्षर किए।



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

## आभार-प्रदर्शन और उत्साह

दूसरे भाग में, जो अध्याय 1:3-10 में पाया जाता है, पौलुस ने एक बार फिर थिस्सलुनिकियों के विश्वास और प्रेम के लिए, विशेषकर सताव के बीच, उनके प्रति आभार प्रदर्शित किया। यद्यपि उसे उन कुछ समस्याओं को फिर से संबोधित करने के लिए लिखना पड़ा जिसके विषय में उसने अपनी पहली पत्री में लिखा था, पौलुस फिर भी थिस्सलुनिकियों से बहुत प्रभावित था। उसने उन्हें फिर से यह बताने के द्वारा उत्साहित किया कि उनका विश्वास कितना उदाहरणीय था, और किस प्रकार उसने दूसरी कलीसियाओं के समक्ष उनके धैर्य की प्रशंसा की थी। 2थिस्सलुनिकियों 1:4 में उसके शब्दों को सुनें:

> हम परमेश्वर की कलीसिया में तुम्हारे विषय में घमण्ड करते हैं कि जितने उपद्रव और क्लेश तुम सहते हो उन सब में तुम्हारा धीरज और विश्वास प्रकट होता है। *(2थिस्सलुनिकियों 1:4)*

## प्रार्थना

तीसरे भाग में, जो अध्याय 1:11 और 12 में पाया जाता है, पौलुस ने स्पष्ट किया कि उसने निरन्तर थिस्सलुनिकियों के लिए प्रार्थना की और कि वे अपने संघर्षों में अकेले नहीं हैं। उसने, तिमुथियुस और सीलास ने दिन-रात प्रार्थना की कि परमेश्वर यह निश्चित करने के लिए उनमें सामर्थ से कार्य करे कि वे मसीह की सेवा में विश्वासयोग्य और फलदायी हों।

## निर्देश

चौथे भाग में निर्देशों की एक श्रृंखला पाई जाती है जो अध्याय 2:1 से लेकर 3:15 तक चलती है। यह लम्बा भाग इस पत्री का मुख्य हिस्सा है। पौलुस के निर्देश तीन भागों में बांटे जा सकते हैं। पहला, 2:1-17 में पौलुस ने मसीह के आगमन के विषय में उन्हें निर्देश दिया। इस अध्याय में बाद में हम इन पदों को और अधिक ध्यान से देखेंगे, अत: यहां हम केवल यह ध्यान देंगे कि पौलुस ने इस बात को ठुकराया कि मसीह का पुनरागमन हो चुका है। जैसा वह अध्याय 2:3 में कहता है:

> क्योंकि वह दिन न आएगा जब तक धर्म का त्याग न हो ले और वह पाप का पुरुष अर्थात् विनाश का पुत्र प्रकट न हो। *(1थिस्सलुनिकियों 2:3)*

फिर, अध्याय 3:1-5 में पौलुस ने थिस्सलुनिकियों से सेवकाई में अपनी और अपने सहकर्मियों की सुरक्षा और सफलता के लिए प्रार्थना करने की विनती की। तीसरा, अध्याय 3:6-15 में पौलुस ने गैरजिम्मेदारी के विरुद्ध यह कहते हुए चेतावनी दी कि थिस्सलुनिके के विश्वासी काम पर पुन: लौटें और अपनी जीविका स्वयं कमाएं। जैसा उसने 3:10 में कहा:

> क्योंकि जब हम तुम्हारे यहां थे तब भी यह आज्ञा तुम्हें देते थे कि यदि कोई काम करना न चाहे तो खाने भी न पाए। *(2थिस्सलुनिकियों 3:10)*

जैसा हम देख सकते हैं, थिस्सलुनिकियों को लिखी पौलुस की दोनों पत्रियां कई रूपों में एकसमान हैं। दोनों इस कलीसिया में उसके विश्वास और आनन्द को एवं उसकी अनुपस्थिति में उनकी विश्वासयोग्यता के लिए उसके आभार को भी व्यक्त करती हैं। फिर भी पौलुस जानता था कि उसकी अनुपस्थिति में गंभीर समस्याएं उठ खड़ी हुई हैं इसलिए उसने थिस्सलुनिकियों को केवल एक बार ही नहीं बल्कि ये दो पत्रियां लिखने के द्वारा कम से कम दो बार निर्देश दिए। उसका मुख्य उद्देश्य यह था कि वे अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन में जिम्मदोरी से जीने और प्रभु के आगमन के सही दृष्टिकोण को प्राप्त करने के द्वारा मसीह और उसकी शिक्षाओं के प्रति विश्वासयोग्य रहें।

इस बिंदू तक हमनें थिस्सलुनिके की कलीसिया को पौलुस द्वारा लिखी पत्रियों की पृष्ठभूमि और उनकी आधारभूत विषय-वस्तु की जांच कर ली है। अब हम हमारे तीसरे विषय की ओर मुड़ने की स्थिति में हैं। ये पत्रियां



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

"अंतिम दिनों" के विषय में पौलुस की मुख्य धर्मवैज्ञानिक धर्मशिक्षा, अर्थात् उसकी युगांतविद्या को किस प्रकार प्रदर्शित करती हैं?

## धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण

थिस्सलुनिकियों को लिखी अपनी पत्रियों में पौलुस ने उनके जीवनों से संबंधित कुछ विशेष विषयों को संबोधित किया। उसने झूठे भविष्यवक्ताओं के विषय में, और विश्वासयोग्य और जिम्मेदारीपूर्ण जीवन के विषय में लिखा और मसीह के द्वितीय आगमन के विषय में उनके दृष्टिकोणों को भी सुधारा। परन्तु जैसा हम पिछले अध्यायों में देख चुके हैं, इन पत्रियों में पौलुस द्वारा शामिल विशेष शिक्षाओं को उसकी सिखाई गई बातों में निहित धर्मविज्ञानी प्रतिबद्धताओं के द्वारा मूलभूत शिक्षाओं से अलग करना सहायक होता है। उसकी दूसरी पत्रियों के समान थिस्सलुनिकियों को लिखी पौलुस की पत्रियां उसके धर्मविज्ञान के केन्द्र से निकली है जिसे हमने उसकी युगांतविद्या कहा है।

आप स्मरण करेंगे कि पौलुस की युगांतविद्या परमेश्वर द्वारा तैयार किए गए इतिहास के प्रारूप के आधार पर पुराने नियम के आम दृष्टिकोणों से निकली है। पहली सदी के यहूदियों में से अधिकांश की धारणा थी कि इतिहास दो युगों में विभाजित है:"यह युग" और "आने वाला युग"। "यह युग" एक तकनीकी शब्द था जो पाप, दण्ड और मृत्यु के वर्तमान युग को दर्शाता था। परन्तु "आने वाला युग" परमेश्वर के शत्रुओं के लिए अनन्त दण्ड और परमेश्वर के लोगों के लिए अनन्त की आशीषों का युग था। इस दृष्टिकोण से मसीहा का आगमन इन दोनों युगों के बीच महत्वपूर्ण बिंदू था। जब मसीहा आया तो वह इस युग के अंत और आने वाले युग के चमत्कारों का आरंभ लेकर आया।

अब मसीह के अनुयायियों के समान पौलुस और अन्य प्रेरितों ने इतिहास के सरल द्वियुगी प्रारूप में थोड़ा परिवर्तन कर दिया। वे जानते थे कि यीशु ही मसीहा था, और यह भी कि यीशु ने आने वाले युग को आरंभ कर दिया था। परन्तु उन्होंने यह भी महसूस किया कि आने वाला युग अपनी संपूर्णता में नहीं आया है, और यह युग अभी समाप्त नहीं हुआ है। अत: उन्होंने स्पष्ट किया कि मसीह के अनुयायी ऐसे समय में रह रहे हैं जिसका वर्णन "आया हुआ और अभी तक नहीं भी आया हुआ" समय के रूप में किया जा सकता है, अर्थात् ऐसा समय जब अनन्त उद्धार का आगामी युग यहां कुछ रूपों में "आया हुआ" है, परन्तु अपनी पूर्णता में यहां "अभी तक नहीं भी आया" है।

युगांतविद्या के इस प्रारुप ने प्रारंभिक कलीसिया के प्रति कुछ मुश्किल संघर्षों को प्रस्तुत किया क्योंकि इसने स्वाभाविक रूप से कुछ प्रश्न उठाए, जैसे कि आने वाले युग का कितना अंश पहले ही आ चुका है? जब मसीहियों ने इस प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास किया, तो कुछ लोगों ने बहुत ही उग्र दृष्टिकोण अपना लिया। जिस प्रकार हमने पौलुस और गलातियों के अध्याय में देखा, कुछ मसीहियों ने इस बात को कम आंकते हुए कि मसीह के पहले आगमन ने कितना कुछ पूरा किया है, इस प्रकार दर्शाया जैसे कि आने वाला युग किसी महत्वपूर्ण रूप में आया ही नहीं है। हमने इसे "कम अनुभव की गई युगांतविद्या" का असंतुलित दृष्टिकोण कहा था।

फिर भी, थिस्सलुनिके में अन्य उग्र दृष्टिकोण हावी हो गया था। थिस्सलुनिकियों ने एक ऐसा दृष्टिकोण विकसित कर लिया था जिसे हम "अतिउग्र युगांतविद्या" कह सकते हैं। झूठे भविष्यवक्ताओं के प्रभाव तले अनेक लोगों ने विश्वास कर लिया था कि आने वाले युग की समाप्ति पहले से ही हो चुकी है या कि फिर होने ही वाली है। और इसी कारणवश उन्होंने इस युग के जीवन से जुड़े विषयों को महत्वहीन समझा।

पौलुस ने अनुभव किया कि इस "अतिउग्र युगांतविद्या" ने थिस्सलुनिकियों को गंभीर समस्याओं में डाल दिया था। अत: उसने इस युग और आने वाले युग के साझे समय के विषय में एक संतुलित दृष्टिकोण देने के लिए उन्हें पत्री लिखी।

पौलुस ने अंत समय के विषय में उनके दृष्टिकोण को संतुलित करने के प्रयास के द्वारा थिस्सलुनिकियों की समस्या के प्रति प्रत्युत्तर दिया। उसने ऐसा कम से कम तीन महत्वपूर्ण रूपों में किया। पहला, उसने उद्धार की धर्मशिक्षा को इस प्रकार स्पष्ट किया जिसने थिस्सलुनिकियों की युगांतविद्या को संतुलित कर दिया। दूसरा, पौलुस ने अंत समय की अपनी धारणा को मसीही नैतिकता के साथ जोड़ा। और तीसरा, उसने थिस्सलुनिकियों को मसीह के पुनरागमन से पहले की घटनाओं से संबंधित उनकी ऐतिहासिक परिस्थिति को प्रदर्शित किया। आइए अब हम ध्यान दें कि किस प्रकार पौलुस की उद्धार की धर्मशिक्षा ने थिस्सलुनिकियों को अपनी युगांतविद्या में संतुलन पाने में सहायता की।

## उद्धार की धर्मशिक्षा

पौलुस ने मसीह में उद्धार के उन पहलुओं पर थिस्सलुनिकियों के ध्यान को खींचने के द्वारा जिनकी उन्होंने उपेक्षा कर दी थी, उनकी अतिउग्र युगांतविद्या को शांत किया। झूठे भविष्यवक्ताओं के प्रभाव तले अनेक थिस्सलुनिकियों ने उद्धार को लगभग पूरी तरह से उन आशीषों के रूप में समझ लिया था जो मसीह के पुनरागमन के साथ आएंगी। मसीह के आगमन के समय आए उद्धार के अतिरिक्त उनके लिए और कुछ महत्वपूर्ण नहीं रह गया था। भविष्य पर दिए गए इस आवश्यकता से अधिक बल का खण्डन करने के लिए पौलुस ने दर्शाया कि वह उद्धार जो मसीह के पुनरागमन पर लागू होगा, वह उस उद्धार पर निर्भर करता है जो पहले से ही दिया जा चुका है। 2थिस्सलुनिकियों 2:13 और 14 उन दृष्टिकोणों का ऐसा सहायक कथन प्रदान करता है जो पौलुस चाहता था कि थिस्सलुनिके के विश्वासी प्राप्त करें। वहां उसके शब्दों को सुनें:

> हे भाइयो, और प्रभु के प्रिय लोगो, चाहिए कि हम तुम्हारे विषय में सदा परमेश्वर का धन्यवाद करते रहें, क्योंकि परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया कि आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर, और सत्य की प्रतीति करके उद्धार पाओ, जिसके लिए उसने तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा को प्राप्त करो। *(2 थिस्सलुनिकियों 2:13-14)*

इन पदों के विषय में काफी कुछ कहा जा सकता है, परन्तु हम यहां पर प्रस्तुत उद्धार के तीन पहलुओं पर ध्यान देंगे। हम पहले देखेंगे कि किस प्रकार पौलुस ने अतीत में उद्धार पर ध्यान आकर्षित किया, फिर हम भविष्य के उद्धार के विषय में उसके पहलू पर ध्यान देंगे, और अंत में देखेंगे कि किस प्रकार यह अनुच्छेद उद्धार के वर्तमान पहलुओं को स्पर्श करता है। तो आइए पहले देखें कि किस प्रकार पौलुस अतीत में उद्धार का वर्णन करता है।

### अतीत का उद्धार

उद्धार के अतीत के पहलुओं के विषय में पौलुस ने परमेश्वर द्वारा थिस्सलुनिकियों के चुनाव या चुने जाने की बात की। पौलुस ने कहा कि परमेश्वर ने थिस्सलुनिकियों को चुन लिया है, अर्थात् पौलुस द्वारा सुसमाचार के प्रचार के माध्यम से विश्वास करने से भी पूर्व परमेश्वर ने पहले से ही निश्चय कर लिया था कि उसने थिस्सलुनिकियों से प्रेम किया है और वह उन्हें उद्धार प्रदान करने जा रहा है। यह चुनाव तो वास्तव में परमेश्वर ने संसार की सृष्टि से पहले ही कर लिया था। इफिसियों 1:4 में सुनें किस प्रकार पौलुस ने उद्धार के लिए परमेश्वर द्वारा लोगों के चुने जाने के विषय में कहा था:

> उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले (मसीह में) चुन लिया कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। *(इफिसियों 1:4)*

यही विचार 2थिस्सलुनिकियों 2:13 में उपस्थित प्रतीत होता है, जहां पौलुस ने यह लिखा:

> परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुन लिया कि आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर, और सत्य की प्रतीति करके उद्धार पाओ। *(2 थिस्सलुनिकियों 2:13)*

पौलुस का बिंदू स्पष्ट है, थिस्सलुनिकियों ने उद्धार इसलिए पाया था क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें उद्धार के लिए चुना था। उद्धार उन चुनावों पर आधारित नहीं होता जो मनुष्य इतिहास में चुनता है, बल्कि यह परमेश्वर की अनन्त इच्छा पर स्थापित होता है।

अब यह जानना भी महत्वपूर्ण है कि पौलुस के लिए चुनाव कोई अलग-थलग या बदलने वाला कार्य नहीं है। जिस प्रकार हम इफिसियों 1:4 में पढ़ चुके हैं परमेश्वर का चुनाव "मसीह में" किया गया था। और जिस प्रकार हम अन्य अध्यायों में देख चुके हैं, "मसीह में" होना यीशु के साथ संयुक्त होना है ताकि जिस प्रकार वह अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से इस युग से आने वाले युग में गया, हम भी इस युग से आने वाले युग में चले जाएंगे क्योंकि हम उसके साथ जुड़े हुए हैं। अत: जब पौलुस ने थिस्सलुनिकियों को उनके चुनाव के विषय में स्मरण दिलाया, तो उसके मन था कि परमेश्वर ने उन्हें यीशु के साथ जोड़ने और इस युग से उस आने वाले युग में स्थनांतरण होने के लिए चुना था।

इसीलिए पौलुस ने थिस्सलुनिकियों के उद्धार के अन्य पहलू के विषय में भी लिखा जो अतीत में घटित हो चुका था, अर्थात् उनका हृदयपरिवर्तन। ध्यान दें कि 2थिस्सलुनिकियों 2:14 में पौलुस ने कहा था कि "उसने तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया" पौलुस ने थिस्सलुनिकियों को उसके सुसमाचार के द्वारा "बुलाया" था। यहां पौलुस ने उस समय का उल्लेख किया जब उसकी दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान उसने थिस्सलुनिकियों के समक्ष मसीह के सुसमाचार का प्रचार किया था। उन्होंने मसीह के शुभ संदेश को सुना और उस पर विश्वास किया था और सुसमाचार के प्रति यह आरंभिक प्रतिक्रिया उनके पास उद्धार को लेकर आई थी।

1थिस्सलुनिकियों 1:4 और 5 में पौलुस ने उद्धार को इस प्रकार स्पष्ट किया जैसे कि वह परमेश्वर के अनन्त चुनाव और थिस्सलुनिकियों द्वारा पहली बार विश्वास करने के द्वारा मिला है।

> हम जानते हैं कि तुम चुने हुए हो क्योंकि हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास न केवल शब्द मात्र ही में वरन् सामर्थ्य में और पवित्र आत्मा में, और बड़े निश्चय के साथ पहुंचा है। *(1थिस्सलुनिकियों 1:4-5)*

थिस्सलुनिकियों के हृदयपरिवर्तन ने प्रमाणित कर दिया था कि परमेश्वर ने पहले से ही उन्हें उद्धार के लिए चुन लिया था। उद्धार के इन पुराने पहलुओं का उल्लेख करने के द्वारा जो थिस्सलुनिकियों के जीवन में पहले से ही क्रियान्वित हो चुके थे, पौलुस ने उस सुसमाचार की पुन: पुष्टि की जिनका प्रचार वह उनके समक्ष पहले ही कर चुका था, और उन्हें आश्वस्त भी किया कि उन्होंने उद्धार के कुछ पहलुओं का अनुभव पहले से ही कर लिया था।

## भविष्य का उद्धार

थिस्सलुनिकियों को लिखी अपनी पत्री में उद्धार की ओर ध्यान आकर्षित करने का पौलुस का दूसरा तरीका उनके उद्धार के भविष्य के पहलुओं पर ध्यान देना था। उदाहरण के तौर पर 1थिस्सलुनिकियों 1:10 में पौलुस ने लिखा कि विश्वासी

> उसके पुत्र के स्वर्ग पर से आने की बाट जोहते रहें जिसे उसने मरे हुओं में से जिलाया, अर्थात् यीशु को जो हमें आने वाले प्रकोप से बचाता है। *(1थिस्सलुनिकियों 1:10)*

लगभग इसी प्रकार 2थिस्सलुनिकियों 2:14 में उसने दर्शाया कि दैवीय छुटकारे का अंतिम लक्ष्य

> हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा प्राप्त करना है। *(2थिस्सलुनिकियों 2:14)*



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

इस बात के बावजूद कि थिस्सलुनिकियों के विश्वासी मसीह के पुनरागमन के विषय में बहुत व्याकुल थे, पौलुस ने माना कि मसीह का भावी आगमन उद्धार की पूर्णता को लाएगा। जैसे कि थिस्सलुनिकियों के लोग सब कुछ अच्छी जरह से जानते थे, उद्धार का परम लक्ष्य ईश्वरीय क्रोध से मुक्ति और मसीह के अनुयायियों को महिमान्वित करना है। पौलुस यह स्वीकार करने में भयभीत नहीं था कि भविष्य में जब हम नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर मसीह के साथ राज्य करेंगे तो हम अकल्पनीय सम्मान और महिमा की दशा में एक मूलभूत और पूर्ण परिवर्तन का अनुभव करेंगे।

### वर्तमान उद्धार

तीसरा, उद्धार के अतीत के और भावी पहलुओं का उल्लेख करने के अतिरिक्त पौलुस ने उद्धार को वर्तमान वास्तविकता के रूप में भी दर्शाया। उसने 2थिस्सलुनिकियों 2:13 में उद्धार के इस पहलू का उल्लेख दो प्रकार से किया।

> परमेश्वर ने आदि से तुम्हें चुना लिया कि आत्मा के द्वारा पवित्र बनकर, और सत्य की प्रतीति करके उद्धार पाओ। *(2 थिस्सलुनिकियों 2:13)*

एक ओर पौलुस ने दर्शाया कि थिस्सलुनिकियों के पास उद्धार आत्मा के द्वारा पवित्र बनने से आया था। जिस प्रकार हमने दूसरे अध्यायों में देखा है जब मसीह का स्वर्गारोहण हुआ तो पवित्र आत्मा बहुत ही शक्तिशाली रूप में परमेश्वर के लोगों पर उतरा। और पौलुस ने दर्शाया कि यह आने वाले युग की आशीष थी। वास्तव में, इफिसियों 1:14 में उसने पवित्र आत्मा को आने वाले महान् युग की हमारी भावी मीरास का “बयाना” कहा था। अत: जब उसने थिस्सलुनिकियों में आत्मा के कार्य का उल्लेख किया तो पौलुस ने इस हैरत भरी सच्चाई की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया कि वे पहले से ही मीरास के एक भाग का अनुभव कर रहे हैं जिसकी प्रतीक्षा वे उत्सुकता से कर रहे थे।

आत्मा की सेवकाई उस समय के दौरान बहुत ही महत्वपूर्ण होती है जब यह युग और आने वाला युग एक दूसरे से मिलते हैं। पाप और मृत्यु के इस युग का भ्रष्टाचार विश्वासियों का विनाश करने का प्रयास करता है। परन्तु आने वाले युग के हमारे पूर्वानुमान के रूप में आत्मा निरन्तर हमें शुद्ध करता है और संसार के भ्रष्टाचार से हमें अलग करता है।

दूसरी ओर पौलुस ने 2थिस्सलुनिकियों 2:13 में इस बात का उल्लेख करते हुए उद्धार के वर्तमान पहलू को भी दर्शाया कि हम सत्य की प्रतीति करके” उद्धार पाते हैं। यहां उसने थिस्सलुनिकियों को झूठी भविष्यवाणी से दूर रहने और जो सत्य उसने उन्हें सौंपा था उससे प्रेम करने को उत्साहित करने के द्वारा परमेश्वर और मसीही विश्वास के प्रति अपने समर्पण को बनाए रखने के लिए विश्वासियों की जिम्मेदारी के बारे में बात की। सत्य में निरन्तर विश्वास बनाये रखना उनके जीवनों में मसीह के वर्तमान उद्धार के कार्य का एक मूलभूत पहलू था।

कलीसिया के संपूर्ण इतिहास के दौरान थिस्सलुनिकियों के समान ऐसे मसीही समूह रहे हैं जिन्होंने मसीह के द्वितीय आगमन पर इतना बल दिया है कि वे उद्धार के अतीत के और भावी पहलुओं के फलस्वरूप आने वाले सौभाग्यों और जिम्मेदारियों को महसूस करने में असफल रहे हैं। यद्यपि हम महिमा में मसीह के पुनरागमन को नजरअंदाज नहीं करना चाहते, फिर भी हमें यह सदैव स्मरण रखना चाहिए कि परमेश्वर ने हमारे लिए पहले से ही कितना कुछ कर दिया है और यह महसूस करना चाहिए कि वह हमारे लिए कितना कुछ करना जारी रखता है।

## नैतिकता

पौलुस ने थिस्सलुनिके की अतिउग्र युगांविद्या का विरोध केवल उद्धार के अतीत के और भावी पहलुओं पर बल देने के द्वारा ही नहीं बल्कि नैतिक मसीही जीवन पर बल देने के द्वारा भी किया। यह देखने के लिए कि किस प्रकार उसकी शिक्षा ने उसकी युगांतविद्या को दर्शाया, हम दो विषयों की ओर देखेंगे: उद्धार की प्रक्रिया और



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

नैतिक जीवन जीने का आशय। तो आइए पहले देखें कि किस प्रकार पौलुस की युगांतविद्या ने उद्धार के अतीत के और वर्तमान पहलुओं से भविष्य की आशीषों की ओर प्रगति को प्रदर्शित किया।

## उद्धार की प्रक्रिया

पौलुस ने 2थिस्सलुनिकियों 2:14 में उद्धार की प्रक्रिया की पूर्ण तस्वीर प्रकट की।

> उसने तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया, कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा को प्राप्त करो। *(2 थिस्सलुनिकियों 2:14)*

पौलुस ने लिखा कि थिस्सलुनिकियों के विश्वासी पवित्र किए गए थे और उन्होंने सत्य पर विश्वास किया था ताकि वे "हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा को प्राप्त करें"। पौलुस ने 1थिस्सलुनिकियों 3:13 में निहित अपनी प्रार्थना में ऐसे ही विचार को व्यक्त किया।

> (प्रभु) तुम्हारे मनों को ऐसा स्थिर करे कि जब हमारा प्रभु यीशु अपने सब पवित्र लोगों के साथ आए, तो वे हमारे परमेश्वर और पिता के सामने पवित्रता में निर्दोष ठहरें। *(1 थिस्सलुनिकियों 3:13)*

थिस्सलुनिकियों ने सब पवित्र जनों के साथ मसीह के पुनरागमन के लिए लालायित थी और पौलुस ने इस चाहत की पुष्टि कर दी थी। परन्तु उसकी यह भी प्रार्थना थी कि वे मसीह के प्रति अपने दिन-प्रतिदिन के समर्पण में भी मजबूत हो जाएं ताकि जब मसीह पुन: लौटे, तो थिस्सलुनिके के विश्वासी उसकी दृष्टि में स्वीकारयोग्य पाए जाएं। अनन्त महिमा में भावी उद्धार प्रक्रिया का लक्ष्य या उद्देश्य है। परमेश्वर ने उद्धार के भावी चरण की ओर हमारी अगुवाई करने के लिए हमारे उद्धार के अतीत के और वर्तमान अनुभवों को तैयार किया है। और अतीत एवं वर्तमान के चरणों के बिना, भावी उद्धार तक पहुंचा नहीं जा सकता।

## नैतिक आशय

उद्धार के अतीत, वर्तमान और भविष्य के पहलुओं का वर्णन करने के द्वारा पौलुस ने दर्शाया कि उस प्रक्रिया में एक आवश्यक कदम दिन-प्रतिदिन का नैतिक जीवन है। संक्षिप्त में, उसने लिखा कि नामधारी मसीही जो धार्मिक रूप से जीवनयापन नहीं करते वे इस प्रक्रिया को पूर्ण नहीं कर सकते क्योंकि उन्होंने इसे वास्तव में कभी आरंभ ही नहीं किया है। इस बात पर बल देते हुए पौलुस ने थिस्सलुनिकियों को स्मरण दिलाया कि यद्यपि वे मसीह के पुनरागमन की आशीषों की आशा लगाने में सही हैं, परन्तु यदि वे उन भावी आशीषों को पाने की आशा रखते हैं तो उन्हें उनके जीवनों की वर्तमान परिस्थितियों पर ध्यान लगाना भी आवश्यक है।

अब हम अन्य अनुच्छेदों से निश्चित हो सकते हैं कि पौलुस यह नहीं मानता था कि मसीह में सच्चे विश्वासियों के लिए अपने उद्धार को खो देना संभव है। उदाहरण के तौर पर, फिलिप्पियों 1:6 में पौलुस ने फिलिप्पियों को इस प्रकार आश्वस्त किया:

> जिसने तुममें अच्छा काम आरंभ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा। *(फिलिप्पियों 1:6)*

फिर भी, सुनें 1थिस्सलुनिकियों 5:5-9 में किस प्रकार पौलुस ने उन्हें उपदेश दिया:

> तुम सब ज्योति की सन्तान और दिन की सन्तान हो; हम न रात के हैं, न अंधकार के हैं। इसलिए हम दूसरों के समान सोते न रहें, पर जागते और सावधान रहें। क्योंकि जो सोते हैं वे रात ही को सोते हैं, और जो मतवाले होते हैं वे रात ही को मतवाले होते हैं। पर हम जो दिन के हैं, विश्वास और प्रेम की झिलम पहनकर और उद्धार की आशा का टोप पहनकर



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

> सावधान रहें। क्योंकि परमेश्वर ने हमें क्रोध के लिए नहीं, परन्तु इसलिए ठहराया है कि हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा उद्धार प्राप्त करें। *(1 थिस्सलुनिकियों 5:5-9)*

पौलुस के उद्धार के आधारभूत तीनरूपीय दृष्टिकोण इस अनुच्छेद में पुन: प्रकट होते हैं। पूर्व में थिस्सलुनिके के विश्वासी "ज्योति की सन्तान और दिन की सन्तान" बन गए थे। परमेश्वर की दृष्टि में उन्होंने इस विशेष प्रतिष्ठा को प्राप्त कर लिया था। और वे उद्धार के प्रति विश्वासयोग्य, प्रेमपूर्ण और आशान्वित हो गए थे। क्योंकि उन्होंने पूर्व में उद्धार का अनुभव कर लिया था, इसलिए पौलुस ने बल दिया कि वर्तमान में उनका उद्धार में निरंतर बने रहना उनकी जिम्मेदारी है: "जागते और सावधान रहें"। और इससे बढ़कर, पौलुस ने कहा कि मसीहियों को इसलिए जागते और सावधान, विश्वास, आशा और प्रेम में दृढ़ रहना है क्योंकि हमारा भावी उद्धार इसी पर निर्भर रहता है। परमेश्वर ने हमें उसके क्रोध को सहने के लिए नहीं परन्तु उद्धार को प्राप्त करने के लिए नियुक्त किया है। परन्तु उसने हमारी वर्तमान विश्वासयोग्यता को भावी उद्धार के साधन के रूप में भी नियुक्त किया है।

इसी प्रकाश में पौलुस ने 1 और 2 थिस्सलुनिकियों में अनेक नैतिक निर्देशों को शामिल किया। उदाहरण के तौर पर, जिस प्रकार हम 1थिस्सलुनिकियों 4:3-5:22 में देख चुके हैं, उसने उन्हें यह उपदेश दिया- जीविकापूर्ण रोजगार को प्राप्त करना, लैंगिक अनैतिकता से दूर रहना, एक-दूसरे से प्रेम करना और उत्साहित करना, हानि के बदले भलाई करना और पवित्र जीवन जीना।

थिस्सलुनिकियों को दिए गए विशेष निर्देश पौलुस के इस दृढ़ भरोसे से उत्पन्न हुए थे कि मसीही एक ऐसे समय में जी रहे हैं जहां उद्धार पहले से ही एक वर्तमान वास्तविकता है।

पौलुस की युगांतविद्या ने उद्धार के अतीत और वर्तमान पहलुओं से भावी आशीषों में प्रगति को दर्शाया।

## ऐतिहासिक अवस्था

पौलुस द्वारा थिस्सलुनिकियों की अतिउग्र युगांतविद्या को सुधारने का तीसरा तरीका मसीह के पुनरागमन से पूर्व की घटनाओं से संबंधित उनकी ऐतिहासिक अवस्था के उसके विवरण में निहित था। आप याद करेंगे कि थिस्सलुनिके के विश्वासी उन ऐतिहासिक घटनाओं के विषय में दुविधा में थे जो प्रभु के पुनरागमन पर घटित होनी थीं। कुछ लोगों को तो इस भ्रम में भी डाल दिया गया था वे उसके आगमन से चूक गए हैं। अन्य लोगों ने यह मान लिया था कि यद्यपि मसीह का आगमन अभी तक नहीं हुआ है, वह निकट भविष्य शीघ्र ही आने वाला है।

पौलुस ने थिस्सलुनिकियों को यह याद दिलाने के द्वारा इन भ्रांत विचारों का प्रत्युत्तर दिया कि मसीह के पुनरागमन से पूर्व काफी घटनाएं घटित होनी हैं- और कि इन घटनाओं का घटित होना अभी बाकी है। सुनें उसने 2थिस्सलुनिकियों 2:1-8 में क्या लिखा:

> अपने प्रभु यीशु मसीह के आने के विषय में...वह दिन न आएगा जब तक धर्म का त्याग न हो ले, वह पाप का पुरुष अर्थात् विनाश का पुत्र प्रकट न हो... क्योंकि अधर्म का भेद अब भी कार्य करता जाता है, पर अभी एक रोकने वाला है, और जब तक वह दूर न हो जाए वह रोके रहेगा। तब वह अधर्मी प्रकट होगा जिसे प्रभु यीशु अपने मुँह की फूंक से मार डालेगा और अपने आगमन के तेज से भस्म करेगा। *(2 थिस्सलुनिकियों 2:1-8)*

इस अनुच्छेद ने कलीसिया के आरंभिक दिनों से ही व्याख्याकारों को आकर्षित किया है और इसके अर्थ पर अनेक भिन्न-भिन्न मत पाए जाते रहे हैं। सामान्य रूप में हम कह सकते हैं कि पौलुस ने थिस्सलुनिकियों को सिखाया था कि उनकी अतिउग्र युगांतविद्या बहकी हुई थी क्योंकि मसीह के महिमा में आगमन से पूर्व कुछ घटनाएं घटित होनी थीं। इस अनुच्छेद के अनुसार मसीह के पुनरागमन से पूर्व चार बातें होनी थीं: अधर्म के भेद का क्रियान्वयन और उसका रोका जाना; विद्रोह या अधर्म का घटित होना; रोकने वाले को दूर किया जाना; और अधर्म के पुरुष का प्रकट होना।



चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

व्याख्याकारों ने इन चार घटकों को कई भिन्न रूपों में समझा है, और हम यहां हर एक की संतुष्टि के लिए हर विषय को सुलझा नहीं पाएंगे। अत: इस समय हम कुछ व्यापक दृष्टिकोणों को ही प्रस्तुत करेंगे जो हमें सबसे अधिक प्रासंगिक लगेंगे।

पहला, पौलुस ने कहा था कि "अधर्म का भेद" पहले से ही काम कर रहा था, और यह भी कि इसे रोक भी दिया गया था। परन्तु उसने इस भेद या रोकने वाले की पहचान नहीं दी। फिर भी, 2थिस्सलुनिकियों 2:7-9 में पौलुस ने स्पष्ट रूप से इस भेद को कलीसिया के प्रमुख शत्रु शैतान के साथ जोड़ा। यह हमें यह भी संकेत देता है कि इसकी प्रकृति शैतानी भी हो सकती है। इस पर भी ध्यान दें कि पौलुस ने कहा था कि कलीसिया का संघर्ष मुख्यत: आत्मिक वस्तुओं से है न कि संसार के शासकों के साथ। जिस प्रकार उसने इफिसियों 6:12 में लिखा:

> हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं। *(इफिसियों 6:12)*

पौलुस ने इस बात का इनकार नहीं किया कि दुष्ट आत्माओं की शक्तियों के सांसारिक साथी भी हैं, जैसे कि ऐसे दुष्ट मानवीय प्रशासन और लोग जो मसीह के विरुद्ध हो गए हैं। परन्तु उसने विश्वासियों को पहले तो दुष्ट आत्माओं की गतिविधि के आधार पर सोचने और फिर आत्मिक युद्ध के घटक के रूप में सांसारिक संघर्षों का आकलन करने को उत्साहित किया।

इससे बढ़कर, अपनी सभी पत्रियों में पौलुस ने प्राय: उन आत्मिक लड़ाइयों के विवरणों का उल्लेख किया जो उस भेद और रोकने वाले के समकक्ष पाए जाते हैं। उदाहरण के तौर पर, कुलुस्सियों 2:15-20 और गलातियों 4:8-9 में उसने सिखाया था कि मसीह के क्रूसीकरण ने उन दुष्ट आत्माओं की शक्तियों को "हथियाररहित" कर दिया जो विश्वास में आने से पहले विश्वासियों पर नियंत्रण रखती थीं, और यह कि पवित्र आत्मा की सेवकाई ने इन कमजोर झूठे देवताओं से विश्वासियों को मुक्त कर दिया था। ये अन्धकार की शक्तियां जीवित तो थीं परन्तु परमेश्वर की शक्ति ने इन्हें रोक दिया गया था।

इन्हीं कारणों से "अधर्म के भेद" को ऐसी दुष्ट शक्ति के रूप में देखना सर्वोत्तम प्रतीत होता है जो आकाश में अपनी शक्तियों को प्रदर्शित करती है, परमेश्वर का विरोध करती है, झूठे शिक्षकों को शक्ति प्रदान करती है और झूठे धर्म को फैलाती है। इसी प्रकार, "रोकने वाला" भी मुख्यत: आत्मिक जगत में सक्रिय होगा, शायद वह स्वर्गदूत या स्वर्गदूतों का समूह या फिर स्वयं पवित्र आत्मा होगा।

दूसरा, पौलुस ने थिस्सलुनिकियों को आश्वस्त किया कि मसीह का आगमन तब तक नहीं होगा जब तक "विद्रोह" या "अधर्म" का समय न आ जाए। क्योंकि रोकने वाला पौलुस के लिखने के समय तक क्रियाशील था, और विद्रोह अभी तक हुआ नहीं था, अत: मसीह का आगमन अभी तक हुआ नहीं था। इस "विद्रोह" या "अधर्म" को उसके समानार्थी समझना सर्वोत्तम प्रतीत होता है जिसे यूहन्ना पूरे प्रकाशितवाक्य में "लड़ाई" कहता है। प्रकाशितवाक्य 16::14 में यह "परमेश्वर के उस बड़े दिन की लड़ाई," प्रकाशितवाक्य 19:19 में यह "घोड़े के सवार से लड़ने," प्रकाशितवाक्य 20:8-9 में "लड़ाई... पवित्र लोगों की छावनी और प्रिय नगर" के विरुद्ध है। इस लड़ाई में प्रभु के अंतिम दिन में परमेश्वर के विरुद्ध दुष्ट की शक्तियों का एकत्रित होना सम्मिलित होगा। यह तब तक नहीं होगा जब तक संसार का अंत न हो जाए। और उस समय मसीह उन सबको नाश कर देगा जो उसके विरुद्ध उठते हैं।

इससे बढ़कर पौलुस ने दर्शाया कि यह विद्रोह तब तक नहीं उठेगा जब तक "रोकने वाला" अधर्म के भेद को रोकना समाप्त न कर दे। क्योंकि थिस्सलुनिके के विश्वासी रोकने वाले के सक्रिय और सुचारु कार्य से परिचित थे, उन्हें इस बात से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं थी कि मसीह के आगमन का सुअवसर उनके हाथ से निकल गया है।

अंत में, पौलुस ने दर्शाया था कि मसीह का आगमन तब तक नहीं होगा जब तक अधर्म का पुरुष प्रकट नहीं हो जाता। 2थिस्सलुनिकियों 2:4-9 में पौलुस के वर्णन से प्रतीत होता है कि अधर्म का पुरुष देहधारी यीशु

मसीह के समान ही प्रतीत होगा। उदाहरणस्वरूप, पद 8 कहता है कि यीशु के समान वह “प्रकट” होगा। पद 6 दर्शाता है कि वह “अपने समय में आएगा”। पद 9 के अनुसार उसका “आना” भी “सामर्थ, और चिन्ह और अद्‌भुत काम के साथ होगा”। और पद 4 कहता है कि वह स्वयं को परमेश्वर कह कर प्रकट करेगा।

अधर्म के पुरुष की पहचान के विषय में अनेक सुझाव दिए गए हैं। कुछ लोगों ने सोचा कि वह पहली सदी के रोमी सम्राट नीरो क्लाउडियस कैसर के समान एक राजनैतिक व्यक्ति होगा। अन्य लोगों ने सोचा कि वह ऐसा राजनैतिक व्यक्ति होगा जो हर युग में पाया जाता है। उदाहरणस्वरूप, यद्यपि नीरो कलीसिया का पहला निरंकुश अत्याचारी था, परन्तु उसके बाद मारकुस आउरेलियस जैसे सम्राट भी आए जो कलीसिया के हितैषी नहीं थे।

शायद सबसे अच्छा सुझाव यही है कि अधर्म का पुरुष एक अकेला व्यक्ति है जिसका प्रकट होना अभी बाकी है, जो मसीह के आगमन से पूर्व की अंतिम पीढ़ी में प्रभावशाली होगा, वह जिसे यूहन्ना 1यूहन्ना 2:18 में “मसीह का विरोधी” कहता है।

यद्यपि हमने जिन तत्वों के बारे में बात की है उनके सटीक अर्थ के विषय में विद्वानों में काफी मतभेद हैं, परन्तु हम उस विशाल अर्थ के विषय में निश्चित हो सकते हैं जो पौलुस दर्शा रहा है: थिस्सलुनिके के कुछ विश्वासी मसीह के आगमन के विषय में अपने उत्साह में इतना आगे बढ़ चुके थे कि उन्होंने मान लिया था कि मसीह का आगमन पहले से ही हो चुका था और जिस प्रकार प्रतिज्ञा की गई थी वे उसके साथ महिमा में उठाए नहीं गए थे। इसलिए पौलुस ने इस बात पर पुन: बल दिया कि मसीह के द्वितीय आगमन से पूर्व कुछ घटनाओं का घटित होना अनिवार्य है। क्योंकि वे घटनाएं अभी घटित नहीं हुई थीं, इसलिए यह स्पष्ट था कि मसीह का आगमन अभी तक नहीं हुआ था।

पौलुस ने उनके वर्तमान जीवन के महत्व के प्रति उनकी आंखें खोलने के लिए दर्शाया कि मसीह का आगमन उस समय से दूर है जितना थिस्सलुनिकियों के लोग सोच रहे थे। और उन्हीं कारणों से जब भी हम मसीह के आगमन की समीपता के बारे में विचार करते हैं तो हम इस जीवन की उपेक्षा कर देने की परीक्षा में पड़ जाते हैं, हमें इस बात को स्मरण रखना है कि “आए हुए और अभी तक नहीं आए हुए” समय में जीवन के उत्तरदायित्वों और संघर्षों में लगे रहना हमारे लिए कितना महत्वपूर्ण है।

## उपसंहार

इस अध्याय में हमने देखा है कि पौलुस किस प्रकार उन समस्याओं का प्रत्युत्तर देता है जो थिस्सलुनिके की कलीसिया में उत्पन्न हुई थीं। हमने थिस्सलुनिकियों के साथ उसके संबंध की पृष्ठभूमि को देखा है। और हमने थिस्सलुनिकियों को लिखी उसकी पत्रियों की विषय-वस्तु को भी देखा है। अंत में, हमने यह देखा कि पौलुस ने किस प्रकार अपने धर्मविज्ञान के केन्द्र को थिस्सलुनिके की कलीसिया की समस्याओं पर लागू किया और लोगों से कहा कि वे अपनी अतिउग्र युगांतविद्या पर अधिक बल न दें और वर्तमान जीवन पर उचित ध्यान दें।

जब हम थिस्सलुनिकियों के प्रति पौलुस के प्रत्युत्तरों पर चिन्तन करते हैं तो हम देखते हैं कि किस प्रकार उसकी युगांतविद्या ने उनकी अनेक व्यावहारिक समस्याओं को सुलझा दिया था और किस प्रकार यह आज भी हमारी अगुवाई कर सकती है। आज भी अनेक मसीही वर्तमान की उपेक्षा करके मसीह के द्वितीय आगमन पर अनुपयुक्त रूप से बल देते हैं। परन्तु मसीह ने हमें अपने राज्य में आज की जिम्मेदारियों को अप्रासंगिक रूप से समझने के लिए नहीं बुलाया है। इसकी अपेक्षा, उसने इस समय को उसके प्रति विश्वासयोग्य रहने, पवित्रता में बढ़ने और इस संसार में उसके गवाह बनने के लिए नियुक्त किया है। पौलुस के धर्मविज्ञान का केन्द्र आज भी हमसे उसी प्रकार बात करता है जिस प्रकार इसने उस समय थिस्सलुनिकियों से की थी। यह हमें उत्साहित करता है कि जब हम प्रभु के आगमन और आने वाले युग की पूर्णता की प्रतीक्षा करते हैं तो विश्वासयोग्य और पवित्र बने रहें।